

---

bRihaspatikavacham

——  
बृहस्पतिकवचम्

——  
Document Information



---

Text title : bRihaspatikavacham

File name : bRihaspatikavach.itx

Category : kavacha, navagraha

Location : doc\_z\_misc\_navagraha

Author : Traditional

Transliterated by : Ravin Bhalekar ravibhalekar at hotmail.com)

Proofread by : Ravin Bhalekar ravibhalekar at hotmail.com

Description-comments : brahmayAmala

Latest update : February 24, 2005

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

March 1, 2026

*sanskritdocuments.org*

---



बृहस्पतिकवचम्



श्रीगणेशाय नमः ।  
अस्य श्रीबृहस्पतिकवचस्तोत्रमन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः,  
अनुष्टुप् छन्दः, गुरुर्देवता, गं बीजं, श्रीशक्तिः,  
ह्रीं कीलकं, गुरुप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।  
अभीष्टफलदं देवं सर्वज्ञं सुरपूजितम् ।  
अक्षमालाधरं शान्तं प्रणमामि बृहस्पतिम् ॥ १ ॥

बृहस्पतिः शिरः पातु ललाटं पातु मे गुरुः ।  
कर्णौ सुरगुरुः पातु नेत्रे मेऽभीष्टदायकः ॥ २ ॥

जिह्वां पातु सुराचार्यो नासां मे वेदपारगः ।  
मुखं मे पातु सर्वज्ञो कण्ठं मे देवतागुरुः ॥ ३ ॥

भुजावाङ्गिरसः पातु करौ पातु शुभप्रदः ।  
स्तनौ मे पातु वागीशः कुक्षिं मे शुभलक्षणः ॥ ४ ॥

नाभिं देवगुरुः पातु मध्यं पातु सुखप्रदः ।  
कटिं पातु जगद्वन्द्य ऊरू मे पातु वाक्पतिः ॥ ५ ॥


जानुजङ्घे सुराचार्यो पादौ विश्वात्मकस्तथा ।  
अन्यानि यानि चाङ्गानि रक्षन्मे सर्वतो गुरुः ॥ ६ ॥

इत्येतत्कवचं दिव्यं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।  
सर्वान्कामानवाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत् ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीब्रह्मयामलोक्तं बृहस्पतिकवचं सम्पूर्णम् ॥

——  
*bRihaspatikavacham*

pdf was typeset on March 1, 2026

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

